DPL - 02

December - Examination 2015

DPL Examination

प्राकृत गद्य–पद्य

Paper - DPL - 02

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 100**

निर्देश : यह प्रश्नपत्र तीन खण्डों अ, ब और स में विभाजीत है। खण्ड अ के सभी प्रश्न करने अनिवार्य है।

(खण्ड – अ) 10 x 2 = 20

नोट : निम्नलिखित सभी प्रश्नों को करना अनिवार्य है तथा सभी उत्तर की अधिकतम सीमा 30 शब्द होगी। इस खण्ड का प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

1) (i) इंद्रदत्त के पुत्र का नाम बताइए।

(ii) आचारांग के अनुसार समता का आचरण करनेवाला व्यक्ति क्या नहीं करता है?

(iii) आर्त–रौद्र कौन से भाव है?

(iv) दशवैकालिक के अनुसार मनुष्य के दुर्भाग्य की अवस्था बताइए।

(v) वज्जालग्ग के रचयिता का नाम बताइए।

(vi) गउडवहो की रचना कब व किस छन्द में हुई?

(vii) 'भगवती आराधना' के अनुसार अभिमान–रहित मनुष्य कैसा होता है?

(viii) उत्तराध्ययन के अनुसार अनासक्त व्यक्ति का लक्षण बताइए।

(ix) प्रथम दामाद मणीराम किस युक्ति से निकाला गया?

(x) समणसुत्तं के अनुसार कौनसा व्यक्ति सुखी होता है?

(खण्ड – ब) $4 \times 10 = 40$

नोट : निम्नलिखित 8 (आठ) प्रश्नों में से कोई 4 (चार) प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है तथा सभी उत्तर की अधिकतम सीमा 200 शब्द होगी। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है।

निम्नलिखित काव्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए तथा व्याकरणिक विश्लेषण भी लिखिये।

2) कम्मवसा खलु जीवा, जीववसाइं कहिंचि कम्माइं।
कत्थइ धणिओ बलवं, धारणिओ कत्थई बलवं।।

3) णत्थि कालस्स णागमो।
सव्वे पाणा पिआउया सुहसाता दुक्खपडिकूला अप्पियवधा पियजीविणो जीवितुकामा।
सव्वेसिं जीवितं पियं।

4) जो सहस्सं सहस्साण संगामे दुज्जए जिणे।
एगं जिणेज्ज अप्पाण एस से परमो जओ।।

5) जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठिकुव्वइ।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइ त्ति वुच्चई।।

6) सीलं वरं कुलाओ कुलेण किं होइ विगयसीलेण।
कमलाइ कद्दमे संभवंति न हु हुंति मलिणाइं।।

7) सोहेइ सुहावेइ अ उवहुज्जंतो लवो वि लच्छीए।
देवी सरस्सई उण असमग्गा किं पि विणडेइ।।

8) कक्कस्सवयणं णिट्ठुरवयणं पेसुण्णहासवयणं च।
जं किंचि विप्पलावं गरहिदवयणं समासेण।।

9) सुद्धं सुद्धसहावं अप्पा अप्पम्मि तं च णायव्वं।
इदि जिणवरेहिं भणियं जं सेयं तं समायरह।।

(खण्ड – स) $2 \times 20 = 40$

नोट : निम्नलिखित 4 (चार) प्रश्नों में से कोई 2 (दो) प्रश्नों का उत्तर देना अनिवार्य है तथा सभी उत्तर की अधिकतम सीमा 500 शब्द होगी। प्रत्येक प्रश्न 20 अंक का है।

निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए।

10) कत्थ वि गामे नरिंदस्स रज्जसंतिकारगो पुरोहिओ आसि। तस्स एगो पुत्तो, पंच य कन्नगाओ संति। तेण चउरो कन्नगाओ विउसमाहण–पुत्ताणं परिणाविआओ। कयाई पंचमीकन्नगाए विवाहमहूसवो पारद्धो। विवाहे चउरो जामाउणो समागया। पुण्णे विवाहे जामायरेहिं विणा सव्वे संबंधिणो नियनियगरेसु गया। जामायरा भोयणलुद्धा गेहे गंतुं न इच्छंति। पुरोहिओ विआरेइ–'सासूए अईव पिया जामायरा, तेण अहुणा पंच छ दिणाइं एए चिट्ठंतु, पच्छा गच्छेज्जा।'

पुणरवि भज्जं कहेइ – अहुणा अज्जयणाओ जामायराणं तिलतेल्लेण जुत्तं रोट्टगं दिज्जा।' सा भोयणसमये जामायराणं तिलतेल्लजुत्तं रोट्टगं देइ। तं दट्ठूण माहवो नाम जामायरो चिंतेइ–घरंमि वि एयं लब्भइ, तओ इओ

गमणं सुहं, मित्ताणं पि कहेइ–हं कल्ले गमिस्सं, जओ भोयणे तेल्लं समागयं। तया ते मित्ता कहिंति – ''अम्हकेरा सासू विउसी अत्थि, तेण सीयलं तिलतेल्लं चिअ उयरग्गिदीवणेण सोहणं, न घयं, तेण तेल्लं देइ. अम्हे उ अत्थ ठास्सामो।'' तया माहवो नाम जामायरो ससुरपासे गच्चा सिक्खं अणुण्णं च मग्गेइ। तया ससुरो 'गच्छ गच्छ' त्ति अणुण्णं देइ, न सिक्खं। एवं 'तिलतेल्लेण माहवो' बीओ वि जामायरो गओ। तइअचउत्थजामायरा न गच्छंति। 'कहं एए निक्कासणिज्जा' इअ चिंतित्ता, लद्धुवाओ ससुरो भज्जं पुच्छेइ – एए जामाउणो रत्तीए सयणाय कया आगच्छन्ति?' तया पिया कहेइ – कयाए रत्तीए पहरे गए आगच्छेज्जा, कया दुतिपहरे गए आगच्छंति।'

11) 'तं णं पुत्ता! मम ते सालिअक्खए पडिनज्जाएहि'।

उवागच्छित्ता धण्णं सत्थवाहं एवं वयासी – 'एए णं ते पंच सालिअक्खए'।

पुत्ता! एए चेव पंच सालिअक्खए उदाहु अन्ने?

'एए णं अन्ने'।

तए णं से धण्णे सत्थवाहे रक्खियं एवं वयासि – 'किं ण पुत्ता? ते चेव एए पंच सालिअक्खए, उदाहु अण्णे?' त्ति।

रक्खिया वयासी–'ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे जाव तिसंझं पडिजागरमाणि विहरामि। तओ एएणं कारणेणं ताओ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए, णो अन्ने।'

तए णं से धण्णे सत्थवाहे रक्खियाए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे सावतेज्जस्स य भंडागारिणिं ठवेइ।

रोहिणिया वि एवं चेव। नवरं – 'तुब्भे ताओ! मम सुबहुयं सगडीसागडं दलाहि, जेण अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएमि।'

'तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाएमि।'

तण णं रायगिहे नयरे बहुजणो अन्नमन्नं एवमाइक्खइ–

'धन्ने णं देवाणुप्पिया। धण्णेसत्थवाहे, जस्स णं रोहिणिया सुण्हा, जीए णं पंच सालिअक्खए सगडसागडिएणं निज्जाइए।'

'तए णं से धण्णे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडसागडेणं निज्जाइए। पासइ, पासित्ता हट्ठतूट्ठे पडिच्छइ। रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरवग्गस्स बहुसु कज्जेसु वड्ढावियं ठावेइ।

12) तओ सो सुहुमदिट्ठीए सुहुमसुहुमं सिप्पिकिरियं कुणेऊण पियरं दंसेइ, पिया वि तत्थ वि कंपि खलणं दरिसेइ, 'तुमए सोहणयरं सिप्पं कयं' ति न कयाइ तं पसंसेइ। अपसंसमाणे पिऊम्मि सो चिंतेइ–मम पिआ मच्झ कलं कहं न पसंसेज्जा? तओ एआरिसं उवायं कहेमि, जे पियरो मे कलं पसंसेज्ज।

एगया तस्स पिआ कज्जप्पसंगेण गामंतरे गओ, तया सो सोमदत्तो सिरिगणेसस्स सुंदरयमं पडिमं काऊण, पडिमाए हिट्ठंमि गूढं नियनामंकियचिण्हं करिऊण, तं मुत्तिं नियमित्तद्वारेण भूमीए अंतो निक्खेवं कारेइ। कालंतरे गामंतराओ पिया समागओ। एगया तस्स मित्तो जणाणमग्गओ एवं कहेइ– 'अज्ज मम सुमिणो समागओ, तेण अमुगाए भूमीए गणेसस्स पहावसालिणी पडिमा अत्थि।' तया लोगेहि सा पुढवी खणिआ, तीए पुहवीए गणेसस्स सुंदरयमा अणुवमा मुत्ती निग्गया। तद्दंसणत्थं बहवे लोगा समागया, तीए सिप्पकलं अईव पसंसिरे।

तया सो इंददत्तो वि सपुत्तो तत्थ समागओ। गं गणेसपडिमं दट्ठूं पुत्तं कहेइ– ''हे पुत्त! एसच्चिय सिप्पकला कहिज्जइ केरिसी पडिमा निम्मविआ, इमाए निम्मावगो खलु धण्णयमो सलाहणिज्जो य अत्थि। पापेसु, कत्थ वि भुल्लं

खुण्णं च अत्थि? जइ तुमं एआरिसी पडिमं निम्मवेज्ज, तया ते सिप्पकलं पसंसेमि, नन्नहा।''

13) अहुणा केवलं केसवो जामायरो तत्थ थिओ संतो गंतुं नेच्छइ। पुरोहिओ वि केसवजामाउणो निक्कासणत्थं जुत्तिं विआरेइ। एगया नियपुत्तस्स कण्णे किंचि वि कहिऊण जया केसव जामायरो भोयणत्थं उवविट्ठो, परोहिअस्स य पुत्तो समीवे ठिओ वट्टइ. तया पुरोहिओ समागओ समाणो पुत्ते पुच्छइ– 'वच्छ!' एत्थ मए रुप्पगं मुत्तं तं च केण गहिअं? सो कहइ–'अहं न जाणामि।' पुरोहिओ बोल्लेइ – तुमए च्चिय गहिअं, हे असच्चवाइ! पाव! धिट्ठ! देहि ममं तं, अन्नहा तुमं मारइस्सं हं' ति कहिऊण सो उवाणहं गहिऊण मायिउं धाविओ। पुत्तो वि मुट्ठिं बंधिऊण पिउस्स सममुहं गओ। दोण्णि ते जुज्झमाणे दट्ठूण केसवो ताणं मज्झे गंतूण – 'मा जुज्झह, मा जुज्झह' त्ति कहिऊण ठिओ। तया सो पुरोहिओ हे जामायर! 'अवसरसु अवसरसु' कहिऊण त उवाणहेण पहरेइ। पुत्तो वि 'केसव! 'दूरीभव दूरीभव' त्ति कहिऊण मुट्ठिए तं केसवं पहरेइ। एवं पिउपुत्ता केसवं ताडिंति। तओ सो तेहिं धक्कामुक्केण ताडिज्जमाणो सिग्घं भग्गो, एवं धक्कामुक्केण 'केसवो' सो अकहिऊण गओ।

तद्दिणे पुरोहिओ निवसहाए विलंबेण गओ। नरिंदो तं पुच्छइ – 'किं विलंबेण तुमं आगओ सि।' सो कहेइ – विवाहमहूसवे चउरो जामायरा समागआ। ते उ भोयणरसलुद्धा चिरं ठिआवि गंतुं न इच्छन्ति। तओ जुत्तीए सव्वे निक्कासिआ ते एवं–